

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा : प्रवाह से बाहर निकलते हुए

किन्नरी पण्ड्या एवं जिगिशा शास्त्री



इस लेख में हम देश में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ई.सी.ई.) की स्थिति का चित्र प्रस्तुत कर रहे हैं और उन विभिन्न स्तरों की चर्चा कर रहे हैं जिन पर पेशेवर लोग ई.सी.ई. कार्यक्रमों को निष्पादित करने में संलग्न हैं। इससे आगे बढ़ते हुए, हम कुछ ऐसी केन्द्रीय सैद्धान्तिक धारणाओं की अनुशंसा भी कर रहे हैं जिन्हें (यह मानते हुए कि उच्च शिक्षा के एक अध्ययन क्षेत्र के रूप में ई.सी.ई. को देखने पर उसमें बच्चों के लिए जमीन पर क्रियान्वित किए जा रहे ई.सी.ई. कार्यक्रमों की गुणवत्ता में परिवर्तन करने की अन्तर्निहित क्षमता होती है) ई.सी.ई. में काम कर रहे पेशेवर लोगों को जानना चाहिए। हम अनुशंसा और आशा कर रहे हैं कि ई.सी.सी.ई. को राष्ट्रीय महत्त्व दिए जाने के सन्दर्भ में ई.सी.ई. के पेशेवर लोगों के लिए उच्च शिक्षा कार्यक्रमों को उपलब्ध बनाने के लिए ज्यादा सशक्त प्रयास किए जाएँगे।

सितम्बर 2013 में प्रारम्भिक बाल्यावस्था की देखभाल तथा शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) पर राष्ट्रीय नीति की अधिसूचना जारी किए जाने के साथ भारत में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में परिवर्तन के दौर की शुरुआत हो गई है। हमें आशा है कि इस प्रकार, देर से ही सही, जीवन के प्रारम्भिक वर्षों के महत्त्व को स्वीकार किए जाने से पूरे देश में सभी बच्चों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली ई.सी.सी.ई. को नई ताकत और गति मिलेगी। अभी तक एक नियामक तंत्र के न होने के कारण, पिछले दो दशकों में देश भर में प्राथमिक बाल्यावस्था शिक्षा (ई.सी.ई.) केन्द्रों की भरमार हो गई है। इस मान्यता ने, कि बच्चों के बारे में जानने के लिए कोई विशेष बात नहीं होती या कि, "एक समय हम सभी बच्चे थे और हमारे अपने स्वयं के बच्चे हैं, इसलिए हम उनके बारे में और उनके लिए जो करना है उसके बारे में जानते हैं" – अनेक लोगों को बच्चों को 'स्कूली शिक्षा' के लिए तैयार करने के बहुत फायदेमन्द धन्धे में लगने के लिए प्रेरित किया है। बच्चों को सीखना जल्दी 'आरम्भ करने' की, और उन्हें साक्षर (यदि इसका मतलब 'ए, बी, सी....तथा 1, 2, 3...' जानना है) बनाने की (वास्तविक) जरूरत को मानते हुए, अधिकांश ई.सी.ई. कार्यक्रम प्राथमिक शिक्षा के नीचे की ओर किए जाने वाले विस्तार के रूप में विकसित किए जाते हैं, जिसके साथ कुछ गीत और कहानियाँ जोड़ दी जाती हैं। बच्चे पालने की लोक समझ से लैस लोग, जिन्हें सीखने तथा सिखाने की विकासात्मक प्रक्रियाओं का ज्ञान नहीं होता या बहुत मामूली ज्ञान होता है, बराबरी से ई.सी.ई. कार्यक्रमों में भागीदारी करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप व्यापक समुदाय को (ग्रामीण तथा शहरी, दोनों क्षेत्रों में समान रूप से) मिले–जुले प्रकार के कार्यक्रमों का समूह उपलब्ध होता है।

दूसरी ओर, विकासात्मक दृष्टि से उपयुक्त तथा सांस्कृतिक दृष्टि से संवेदनशील कार्यक्रम देश के विश्वविद्यालयों के विभागों के प्रयोगशाला वाले स्कूलों में उपलब्ध रहते हैं और कुछ रोचक कार्यक्रम गैर–सरकारी संगठनों तथा निजी स्कूलों द्वारा संचालित किए जाते हैं। हमें ऐसे ई.सी.ई. कार्यक्रम भी मिलते हैं जो मारिया मोण्टेसरी तथा अन्य दार्शनिकों द्वारा प्रचलित किसी विशेष विचारधारा और पद्धति का अनुसरण करते हैं। लेकिन इनकी संख्या बहुत थोड़ी है। इसके साथ–साथ, समेकित बाल विकास सेवाओं (आई.सी.डी.एस.) के हिस्से के रूप में सरकार द्वारा संचालित आँगनवाड़ी केन्द्र भी हैं जिनसे इस योजना के अन्तर्गत पोषण और स्वास्थ्य जैसे अन्य पहलुओं का ध्यान रखते हुए ई.सी.ई. के भी क्रियान्वयन करने की अपेक्षा की जाती है। इस प्रकार भारत में ई.सी.ई. के क्षेत्र में कई प्रकार की धाराएँ काम कर रही हैं।

आज के स्पर्धात्मक तथा अँग्रेजी भाषा के वर्चस्व वाले परिदृश्य में माता–पिता तथा समुदाय ऐसे कार्यक्रम पसन्द करते हैं जो बच्चे को स्कूल के वातावरण में 'ठीक से जमने' में मदद करेंगे। तथापि, प्रदान किए जा रहे

कार्यक्रम की प्रकृति तथा गुणवत्ता तब भी पूर्व–स्कूल के मालिकों की जिम्मेदारी होती है। इसे देखते हुए, यदि विकासात्मक दृष्टि से उपयुक्त, गुणवत्ता वाले कार्यक्रम उपलब्ध कराए जाना है, तो सरकार को एक नियामक तंत्र को स्थापित करने की आवश्यकता है। साथ ही, देश के अकादमिक जगत को उच्च शिक्षा, शोध तथा विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में प्रारम्भिक वर्षों की शिक्षा को स्वीकार करने की जरूरत है।

छोटे बच्चों को ई.सी.ई. कार्यक्रम उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न रूपों में अनेक व्यक्ति, (उनको हम आगे 'पेशेवर लोग' कहेंगे) काम करते हैं। यहाँ हम उन विविध स्तरों की चर्चा करेंगे जिन पर ये पेशेवर लोग अपना योगदान देते हैं, और इसकी भी कि हमारे देश के छोटे बच्चों को गुणवत्तापूर्ण कार्यक्रम प्रदान करने के लिए इन लोगों को किस प्रकार की शिक्षा दिए जाने की आवश्यकता होगी।

यहाँ हम विभिन्न स्तरों पर काम करने वाले कुछ प्रकार के पेशेवर लोगों (जो सीधे बच्चों के साथ काम करते हैं से लगाकर जो सीधे सम्पर्क की दृष्टि से काफी दूर होते है, तक) की सूची दे रहे हैंः

- शिक्षक / देखभाल करने वाला जो रोजमर्रा के आधार पर बच्चों के साथ काम करता है। ऐसे लोगों को जमीनी स्तर के या प्रथम पंक्ति के कार्यकर्ता भी कहा जाता है, आई.सी.डी.एस. व्यवस्था में वे आँगनवाड़ी कार्यकर्ता होते हैं, और हर निजी या सरकार द्वारा संचालित पूर्व–स्कूल में वे शिक्षक होते हैं।
- दूसरा स्तर निरीक्षक समूह का होता है। वे देखभाल करने वालों, अर्थात आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, के सीधे सम्पर्क में रहते हैं। वे देखभाल करने वालों की रोजमर्रा की गतिविधियों की निगरानी करते हैं, और आदर्श स्थिति में उन्हें उनका मार्गदर्शक भी होना चाहिए, पूर्व–स्कूलों की बड़ी शृंखलाओं में वे पाठ्यक्रम विकसित करने वाले लोग तथा प्रत्येक आयु समूह के लिए पूर्व–स्कूल कार्यक्रम समन्वयक भी हो सकते हैं।
- ई.सी.ई. कार्यक्रम समूह के भीतर तीसरा समूह सबसे उच्चतम स्तर पर होता है। आई.सी.डी.एस.योजना के भीतर वे बाल विकास परियोजना अधिकारी (सी.पी.डी.ओ.) होते हैं। वे आँगनवाड़ियों की बड़ी संख्या की निगरानी करते हैं, और आदर्श स्थिति में उन्हें गुणवत्तापूर्ण सेवाओं को क्रियान्वित करने के लिए नेतृत्व करना चाहिए। वे निरीक्षकों का मार्गदर्शन करते है। निजी पूर्व–स्कूलों में वे प्रिंसिपल या पूर्व–स्कूल कार्यक्रमों के प्रमुख होते हैं।
- इस सीढ़ी में चौथा समूह शिक्षक प्रशिक्षक समूह है। आई.सी.डी.एस.योजना के अन्तर्गत, वे विभिन्न संवर्गों के लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए कार्यक्रमों का निर्माण तथा उनका क्रियान्वयन करते हैं। निजी क्षेत्र में, वे नर्सरी शिक्षकों के प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षक होते हैं जो पूर्व–स्कूल शिक्षकों को प्रशिक्षण देते हैं।
- पेशेवर लोगों के इन चार वर्गों, जो प्रारम्भिक वर्षों के किसी कार्यक्रम (चाहे आई.सी.डी.एस. या निजी क्षेत्र में अन्य) से कमोबेश सीधे जुड़े रहते हैं, के अतिरिक्त प्रारम्भिक बाल्यावस्था के क्षेत्र को ऐसे योग्यता प्राप्त पेशेवर लोगों की आवश्यकता होती है जो नीति के विकास में, ई.सी.ई. और प्रारम्भिक बाल्यावस्था की देखभाल तथा शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) की पैरवी करने में सहायक हो सकते हैं; जो सीखने की सामग्री, खिलौने तथा किताबें डिजाइन करते है; शोधकर्ता इत्यादि। इन स्तरों में से प्रत्येक पर कारगर ढंग से काम करने के लिए ई.सी.ई. को अध्ययन के एक क्षेत्र के रूप में पूरी तरह से समझना आवश्यक होगा।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारे देश में चूँकि एक कार्यक्षेत्र के रूप में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा असंगठित तथा अनियंत्रित बनी रही है, इसलिए अध्ययन तथा जाँच–पड़ताल के एक क्षेत्र के रूप में इस पर सीमित ध्यान ही दिया गया है। इस इतिहास को देखते हुए, उपरोक्त स्तरों में से प्रत्येक पर संलग्न लोगों के लिए गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा कार्यक्रमों का अभाव है। एक कार्यक्षेत्र के रूप में ई.सी.ई. में विशेष प्रशिक्षण से यह सम्भव होगा कि गुणवत्तापूर्ण ई.सी.ई. पाठ्यक्रम विकसित किए जा सकें, तथा ऐसे स्थान निर्मित किए जा सकें जो छोटे बच्चों को शारीरिक–अंगचालन, मानसिक–सामाजिक, संज्ञानात्मक और सृजनात्मक क्षेत्रों में विकास करने के अवसर प्रदान करें। बच्चों के लिए सामग्री की रचना और उसका चुनाव आयु तथा विशेषता के क्षेत्र के लिए उपयुक्त होगा। ई.सी.ई. की समझ वाले पेशेवर लोग प्रशिक्षण कार्यक्रमों को विकसित कर सकेंगे और छोटे बच्चों के भावी शिक्षकों को तथा ई.सी.ई. संस्थाओं के प्रशासकों को प्रशिक्षण प्रदान कर सकेंगे।

छोटे बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण ई.सी.ई. कार्यक्रम के लिए प्रारम्भिक वर्षों की शिक्षा के बारे में क्यों, कब, क्या और कैसे, इन सभी पहलुओं की अकादमिक रूप से गहरी तथा सैद्धान्तिक रूप से मजबूत समझ जरूरी होगी। इसलिए जहाँ एक ओर क्षेत्र में काम करने वाले पेशेवर लोगों के प्रत्येक स्तर की जरूरतों और उनकी भूमिका से की जाने वाली अपेक्षाओं पर निर्भर करते हुए प्रशिक्षण कार्यक्रम की विषयवस्तु तथा प्रकृति बदलती रहेगी, वहीं दूसरी ओर कुछ केन्द्रीय सैद्धान्तिक सामग्री ऐसी होगी जो सबके लिए साझा होगी और जो ई.सी.ई. के उच्च शिक्षा कार्यक्रम के पाठ्यक्रम का आधार–स्वरूप होगी। इसके साथ ही, बच्चों के साथ सीधे जुड़ने और उनके साथ काम करने का अभ्यास एक ऐसा महत्त्वपूर्ण अंग है जिसे सभी कार्यक्रमों में शामिल रहना चाहिए। कार्यक्रम का एक बड़ा भाग, प्रतिशत में करीब–करीब सैद्धान्तिक पहलू के बराबर, इस ढंग से निर्मित किया जाना चाहिए कि भागीदारों को बच्चों के साथ सक्रिय अनुभव (बच्चों का अवलोकन करना, उनका आकलन करना, सीखने की सामग्री डिजाइन करना, कार्यक्रमों को डिजाइन करना, इत्यादि) का अवसर मिल सके।

केन्द्रीय सैद्धान्तिक पहलुओं को मोटे तौर पर तीन क्षेत्रों में बाँटा जा सकता है अर्थात बच्चों के विकास को समझना, प्रारम्भिक वर्षों के लिए पाठ्यक्रम तथा छोटे बच्चों के साथ काम करना। इन मोटे–मोटे क्षेत्रों में से प्रत्येक के भीतर ऐसी विशिष्ट सैद्धान्तिक विषयवस्तु वाले पहलू जिन पर ध्यान केन्द्रित किया जाना होगा इस प्रकार हैं :



बच्चों के बड़े होने तथा विकास की प्रक्रिया को समझना; विकास के क्षेत्र; बच्चों के लिए सीखने की प्रक्रिया; बच्चों को प्रभावित करने वाले कारक; प्रारम्भिक बचपन के बारे में दार्शनिक विचारधाराएँ; बाल विकास के सिद्धान्त; तथा माता–पिता और समुदाय की भागीदारी।

शोध तथा व्यावहारिक कार्य, दोनों दर्शाते हैं कि हर उस व्यक्ति को जो बच्चों के साथ और उनके लिए काम करता है बच्चों तथा बाल्यावस्था के इन बुनियादी पहलुओं के बारे में ज्ञात होना चाहिए।

एक ई.सी.ई. कार्यक्रम में बच्चों के साथ काम करने तथा पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में जिन अन्य महत्त्वपूर्ण पहलुओं की विषयवस्तु पर ध्यान दिए जाने की जरूरत है, वे हैं : बच्चों के बड़े होने, व्यवहार तथा विकास में उनका मार्गदर्शन; बच्चों के लिए सीखने के परिणाम तथा सम्बन्धित अनुभव; पाठ्यक्रम तथा मूल्यांकन; बच्चों के लिए संगीत, छोटे बच्चों के साथ काम करने के नैतिक पहलू; सांस्कृतिक सन्दर्भों को समझना, लैंगिक मुद्दों तथा विशेष जरूरतों वाले बच्चों को शामिल करना; छोटे बच्चों के साथ शोध आदि।

पाठ्यक्रम के इन विशेष अंगों में से प्रत्येक पर काम करने के दौरान, दो महत्त्वपूर्ण तत्वों का सभी में समावेश किया जाना जरूरी है : बच्चों की सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता को समझना और बच्चों के साथ काम करने के लिए नैतिक सावधानियाँ। ई.सी.ई. कार्यक्रम से जुड़े हर व्यक्ति को हमारे देश में बच्चों के विभिन्न सन्दर्भों, जैसे कि ग्रामीण, शहरी, जनजातीय, पारिवारिक प्रकार तथा जाति, वर्ग, भाषा, लिंग की विविधता आदि को समझना आवश्यक होगा। पूर्व–स्कूल के परिवेश में बच्चों की इस जटिल भिन्नता को समझने में तथा हर बच्चा अपने जिस विशिष्ट व्यक्तित्व को लेकर आता है उसे सराहने में शैक्षणिक कार्यक्रमों को पेशेवर लोगों की सहायता करना चाहिए। सभी संवर्गों के पेशेवर लोगों के लिए प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के सभी कार्यक्रमों को प्रत्येक बच्चे को पहचानने, सराहने तथा उसके प्रति संवेदनशील होने में उन व्यक्तियों की सहायता करना चाहिए।

विभिन्न प्रकार की स्थितियों में कार्यवाही करने के लिए, छोटे बच्चों तथा उनकी शिक्षा के साथ काम करने के परिवेशों का मजबूत नैतिक आधार होना जरूरी होगा। इसके लिए ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो छोटे बच्चों के साथ काम करने में नैतिक दृष्टिकोणों का पालन करेंगे और दुविधाओं की स्थिति में नैतिक निर्णय लेंगे।

उपरोक्त सभी बातों के अलावा, निरीक्षकों के पदों पर स्थित लोगों, जो दूसरे लोगों का संचालन करने, निगरानी करने तथा परामर्श देने का काम करते हैं, को इन प्रक्रियाओं की सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों प्रकार की समझ की जरूरत पड़ेगी। उनके लिए निगरानी करने और परामर्श देने के अन्तर, और व्यवहार में उनके परस्पर जुड़े रहने के तरीके को समझना भी आवश्यक होगा।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के क्षेत्र की इस समझ का प्रभाव ई.सी.ई. कार्यक्रमों की रचना करने, उनको कार्यान्वित करने तथा उनकी निगरानी रखने पर पड़ेगा। आँगनवाड़ियों या पूर्व–स्कूलों में सभी काम करने वाले लोगों के द्वारा, या नीति निर्माताओं तथा पैरवीकारों द्वारा लिए जाने वाले निर्णय तदर्थ नहीं होंगे, बल्कि मजबूत सैद्धान्तिक आधार–ज्ञान तथा व्यावहारिक प्रासंगिकता पर आधारित होंगे। जमीन पर किए जाने वाले कामों का कुछ सुदृढ़ आधार होगा और उसके फलस्वरूप समुचित रूप से अपेक्षित परिणाम प्राप्त होंगे। इससे पूर्व–स्कूल के परिवेशों में छोटे बच्चों के 'सर्वांगीण विकास' की (न कि उन्हें केवल आगे के स्कूल में 'ठीक से जमने' के लिए तैयार करने की) आवश्यकता को पहचानने तथा उसके लिए कार्यक्रम प्रदान करने में सहायता मिलेगी।

अन्त में निष्कर्ष यह है कि किसी भी प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रम में बच्चे और उनका सर्वांगीण विकास ही हर प्रक्रिया के केन्द्र में होना चाहिए। हमारी समृद्ध सांस्कृतिक प्रथाएँ बच्चों के साथ काम करने के बारे में कुछ अन्तर्दृष्टियाँ प्रदान करती हैं, लेकिन प्रारम्भिक वर्षों में सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण अनुभव प्रदान करने के लिए, ई.सी.ई. के क्षेत्र में प्रक्रियात्मक रूप से शामिल सभी स्तरों पर ऐसे लोगों की आवश्यकता होगी जिन्हें इस क्षेत्र की विशिष्ट विषयवस्तु के ज्ञान के आधार पर पेशेवर ढंग से प्रशिक्षित किया गया हो। बारहवीं पंचवर्षीय योजना में ई.सी.ई. पर दिए गए जोर से, और साथ ही ई.सी.सी.ई. पर राष्ट्रीय नीति के अनुमोदन से हमारे नीति निर्माताओं का इरादा स्पष्ट है। हमारे देश में उच्च शिक्षा ने प्राथमिक शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा को अध्ययन के महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों के रूप में सफलतापूर्वक स्वीकार किया है। अब समय आ गया है कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा को भी उसका जायज महत्त्व हासिल हो।







चित्रों के लिए आभार : मेडक ई.सी.ई. इनीशिएटिव टीम, अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन

किन्नरी पण्ड्या अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के शिक्षक समुदाय की सदस्य हैं और एम.ए. के कार्यक्रम में पढ़ाती हैं। वे प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के विकास की पहल करने वाले दल की सदस्य हैं और अपने अकादमिक कार्य के साथ–साथ सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था में भी सीधे सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। उन्होंने गुजरात में स्कूल मूल्यांकन पद्धतियों को संशोधित करने के एक जिला–स्तरीय प्रयास का प्रबन्धन किया है; उत्तराखण्ड और छत्तीसगढ़ में सेवा–पूर्व अध्यापक–शिक्षा के पाठ्यक्रम के पुनरीक्षण में भाग लिया है; और आंध्रप्रदेश के आई.सी.डी.एस. केन्द्रों के साथ सक्रिय रूप से कार्य करती हैं। उनसे kinnari@azimpremjifoundation.org सम्पर्क किया जा सकता है।

जिगिशा शास्त्री अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय में शिक्षक हैं और एम.ए. के कार्यक्रम में पढ़ाती हैं। वे प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा के विकास की पहल करने वाले दल की सदस्य हैं और आंध्रप्रदेश के आई.सी.डी.एस. केन्द्रों के साथ व्यापक रूप से काम करती हैं। पहले वे बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत थीं। साथ ही यूनीसेफ गुजरात के लिए राज्य ई.सी.ई. सलाहकार थीं। ई.सी.ई. में उनकी रुचि के क्षेत्र प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम विकास, मूल्यांकन तथा सामाजिक योग्यता हैं। उनसे jigisha.shastri@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : सत्येन्द्र त्रिपाठी